कथा सरिता

भावनात्मक विकास

हिम्मत पटेल नाम का एक व्यक्ति था। नाम के अनुरूप वह साहसी और हिम्मती था। उसका कहना था कि इस दुनिया में कोई काम करना मुश्किल नहीं है। उसके इस कथन के पीछे शारीरिक बल था न कि बुद्धि का। उसके बड़बोलेपन से परेशान होकर कुछ युवकों ने उसे नसीहत देने का विचार किया। वे सब मिलकर पटेल के पास गए और बोले, पटेल, तुम्हारी हिम्मत का जवाब नहीं है। मुश्किल से मुश्किल काम तुम चुटकियों में कर सकते हो। एक सरल सा काम करके दिखा दो। पटेल ने कहा, बोलो क्या काम है? युवकों ने कहा, तुमसे दो कदम की दूरी पर यह जो तुम्हारी छाया दिख रही है, उसे छूकर बता दो। हम तुम्हारी बहादुरी का लोहा मान जायेंगे। अभी लो, कहकर पटेल ने अपनी छाया को छूने की कोशिश की, पर छाया हाथ न आई। जितना वह आगे बढ़ता, छाया उतनी ही आगे बढ़ जाती। वह दौड़ने लगा। उसे दौड़ता देख एक आदमी ने पूछा कि तुम दौड़ क्यों रहे हो, हिम्मत ने समस्या उसे बता दी। समस्या सुनकर व्यक्ति बोला, बस इतनी सी बात। तुम जहां हो, वहीं रूक जाओ। अभी तुम्हारा मुंह पश्चिम की ओर कर लो, फिर देखो। पटेल ने अपना मुंह पश्चिम की ओर कर लिया और छाया उसके कदम चूमने लगी। दिशा बदलो, दशा अपने आप बदल जायेगी। मस्तिष्क की अनेक परतें हैं। उसका परिष्कार करना ही चाहिए। भावनात्मक विकास करना जरूरी है।

जीतने की जिद नहीं छोड़ी

घटना 1933 की है। पंजाब रेजीमेंट और सेपर्स एंड माइनर्स की टीमों के बीच हॉकी का मैच चल रहा था। पंजाब रेजीमेंट का एक खिलाड़ी अपने प्रभावशाली खेल से दर्शकों का मन मोह रहा था। यह देख विपक्षी टीम के एक खिलाड़ी के मन में ईर्ष्या की भावना आ गई। उसने अवसर पाते ही उस खिलाड़ी के सिर पर प्रहार कर दिया। वह घायल हो गया, किंतु अगले कुछ ही मिनटों में सिर पर पट्टी बांधे वह खिलाड़ी मैदान में हाजिर था। आमना-सामना होने पर उसने प्रहार करने वाले खिलाड़ी से कहा - मैं बदला लिए बिना नहीं रहूंगा, तुम देख लेना। यह सुनकर उस खिलाड़ी के मन में यह भय बैठ गया कि वह खिलाड़ी भी उस पर हॉकी से चोट करेगा। अत: वह संभलकर खेलने लगा। उस घायल खिलाड़ी के चेहरे पर एक दृढ़ निश्चय झलक रहा था। उसके खेल में और अधिक पैनापन आ गया। उसने विपक्षी टीम पर एक के बाद एक छह गोल कर दिए और अपनी टीम को जिता दिया। खेल समाप्त होने पर वह प्रहार करने वाले खिलाड़ी के पास जाकर बोला - तुमने मुझ पर वार करके मुझे बदला लेने के लिए मजबूर कर दिया। इसी भावना से मैंने छह गोल किए और अपना बदला पूरा किया। यदि तुमने मुझे पर वार न किया होता तो शायद मैं दो गोल भी न कर पाता। यह घायल खिलाड़ी थे ध्यानचंद जो आगे चलकर हॉकी के जादूगर की उपाधि से अलंकृत हुए। अत: व्यक्ति या प्रकृति प्रदत्त प्रतिकूलताओं से निराश न होते हुए उन्हें ही आगे बढ़ने का जरिया बना लिया जाए तो बड़ी उपलब्धियां हासिल हो सकती हैं।

कार्य का प्रयोजन

एक धनाढ्य व्यक्ति प्रति दिन एक मंदिर में पहुंचता। देवता की मूर्ति के समक्ष घी का दीपक जलाता और भगवान से अपनी सुख-समृद्धि की कामना करता। वर्षों से वह इसी प्रकार प्रति दिन मंदिर में दीया जलाता आ रहा था। दूसरी ओर, एक गरीब व्यक्ति अंधेरा होते ही तेल का दीपक जलाता। उसे अपने इष्टदेव की मूर्ति के सामने रखकर प्राणिमात्र के कल्याण की कामना करता। उसके बाद वह दीपक को उठाकर अपने घर के सामने वाली अंधेरी गली के किनारे रख आता। दीपक के उजाले में लोग बिना ठोकर खाए गली का रास्ता सहजता से पार कर लेते। दैवयोग से सेठ और उस गरीब का एक ही दिन निधन हो गया। धर्मराज ने सेठ से ज्यादा निर्धन के पुण्य गिनाते हुए उसे स्वर्ग में अच्छा स्थान देने का पार्षदों को आदेश दिया। धनवान निर्णय सुनकर भौंचक्क रह गया। वह बोला - यह भेदभाव क्यों? मैं प्रति दिन घी का दीपक जलाता था, जबकि यह कंगाल तेल का। फिर इसे मुझसे ज्यादा पुण्यात्मा क्यों ठहराया गया है? धर्मराज ने मुस्कुराकर कहा, तुम अपनी सुख-सुविधाओं तथा धन के लिए दीपक जलाते थे, जबकि यह गरीब सभी की भलाई तथा लोगों को राह दिखाने के लिए अंधेरी गली में दीपक जलाकर रखता था। कर्मों का आकलन इस बात से किया जाता है कि वह कार्य किस प्रयोजन से किया जा रहा है। दूसरों की भलाई के लिए किए गए किसी भी कार्य का पुण्य स्वभावत: अधिक होता है।

क्रोध

एक 12-13 साल के लड़के को बहुत क्रोध आता था। उसके पिता ने उसे ढेर सारी कीलें दी और कहा कि जब भी उसे क्रोध आए वो घर के सामने लगे पेड़ में वह कीलें ठोक दे। पहले दिन लड़के ने पेड़ में 30 कीलें ठोकी। अगले कुछ हफ्तों में उसे अपने क्रोध पर धीरे-धीरे नियंत्रण करना आ गया। अब वह पेड़ में प्रतिदिन इक्का-दूक्का कीलें ही ठोकता था। अब उसे यह समझ में आ गया था कि पेड़ में कीलें ठोंकने के बजाए क्रोध पर नियंत्रण करना आसान था। एक दिन ऐसा भी आया जब उसने पेड़ में एक भी कील नहीं ठोंकी। जब उसने अपने पिता को यह बताया तो पिता ने उससे कहा कि वह सारी कीलों को पेड़ से निकाल दें। लड़के ने बड़ी मेहनत करके जैसे-तैसे पेड़ से सारी कीलें खींचकर निकाल दी। जब उसने अपने पिता को काम पूरा हो जाने के बारे में बताया तो पिता ने बेटे का हाथ थामकर उसे पेड़ के पास लेकर गया। पिता ने पेड़ को देखते हुए बेटे से कहा - तुमने बहुत अच्छा काम किया, मेरे बेटे, लेकिन पेड़ के तने पर बने सैकड़ों कीलों के इन निशानों को देखो। अब वह पेड़ इतना खुबसूरत नहीं रहा। हर बार जब तुमने क्रोध किया करते थे तब इसी तरह के निशान दूसरों के मन पर बन जाते थे। अत: अपने मन-वचन-कर्म से कभी भी ऐसा कृत्य न करो जिसके लिए तुम्हें सदैव पछताना पड़ें।

वीतराग

भगवान महावीर जन्मजात वीतरागी थे। राजपरिवार में जन्म लेने के कारण उनका पालन-पोषण राजसी ठाठ-बाट के साथ हो रहा था। किन्तु, वह सांसारिक माया से विरक्त दिखाई देने लगे। जब वह छह वर्ष के हुए, तो उनकी शिक्षा के लिए एक योग्य गुरु को बुलवाया गया। गुरु ने विधिवत् शिक्षा संस्कार के बाद उनसे कहा, 'बोलो बेटा, एक'। महावीर ने दोहराया, 'एक'। गुरु ने कहा, 'बोलो दो'। इस पर बालक महावीर ने कहा, 'गुरुदेव, एक ही में तो सब कुछ है। एक से आगे भला और क्या है? गुरु जी उनके इस कथन को समझ नहीं पाए। वह बोले, 'वत्स। एक से सौ के बीच में बहुत कुछ है।' महावीर ने उत्तर दिया - गुरुवर, ब्रह्माण्ड एक है, आत्मा एक है। इस एक को जानने में ही पूरा जीवन व्यतीत हो जाता है, फिर भला एक से आगे जानने से क्या होगा? गुरु परम ज्ञानी थे। बालक महावीर के मुख से ज्ञान का सार सुनकर वह हतप्रभ रह गए। वह समझ गए कि यह बालक असाधारण है, जिसने इतनी अल्प आयु में आत्मा और ब्रह्माण्ड के रहस्य को समझ लिया है। वह मन ही मन शिष्य के प्रति श्रद्धा से झुक गए। फिर गुरु ने राजा से कहा, 'महाराज, आपका पुत्र कोई महान आत्मा है। यह पहला शिष्य है, जिसे कुछ सिखाने की जगह मैं खुद उससे सीखकर जा रहा हूँ।

नूर कम्पाउण्ड, गया। बौद्ध धर्म के अनुयायी को 'परमात्म अवतरण' का संदेश देते हुए ब्र.कु.शीला।

कोलारा। आर्य समाज के अध्यक्ष डॉ.सुदर्शन देव आचार्य को परमात्म अवतरण का संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.लीना तथा अन्य।

लोईयां। स्वामी चितानन्द सरस्वती को ब्रह्माकुमारीज् की सेवाओं से अवगत कराते हुए ब्र.कु.शिव शक्ति।

मिर्जापुर। 'स्नेह मिलन' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए बाल विकाश मंत्री कैलाश चौरसिया, क्षेत्रिय संचालिका ब्र.कु.सुरेन्द्र, ब्र.कु.बिन्दु, ब्र.कु.दीपेन्द्र तथा अन्य।

नंदुरबार। अभिनेत्री सुरेखा पुणेकर को परमात्म अवतरण का संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.कल्पना।

मेड़तासिटी। पोस्ट मास्टर जनरल विश्वनाथ त्रिपाठी, निरूपमा त्रिपाठी को परमात्म अवतरण का संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.अनुराधा एवं ब्र.कु.सुनिता।